धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जून 2010

* भगवान देवात्मा की देव वाणी

* रुहानी शत्रु

* कातिल बनने से बचें

* धूमपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

* जीवन प्रसंग

* पाठकों का पन्ना

* क्षमा

* शुभ संग्राम

भगवान देवात्मा की देव वाणी

जो मनुष्य जितना नीच होता है, उतना ही वह स्वार्थ से भरा हुआ होता है और इसीलिए स्वार्थ से परिपूर्ण नीच जनों के द्वारा किसी समाज वा देश का कोई हित साधन नहीं हो सकता। जो जन जितना स्वार्थ त्याग करता है, वह उतना ही उच्च बनता है, और अपना और औरों का हित साधन करता है। हमारे सामाजिक जनों के भीतर भी स्वार्थ त्याग का जितना भाव बढ़ेगा, उतना ही उनका और समाज का हित साधन होगा।

अहं संस्कृत शब्द है, इस का अर्थ है "मैं"। पर भी संस्कृत शब्द है, जिस का अर्थ है "और"। मैं और पर एक नहीं। जब तक किसी मनुष्य के हृदय से केवल इस प्रकार की आकांक्षा उन्पन्न होती रहती है, कि मैं अपना आराम वा सुख लाभ करूं, मैं अपना फायदा देखूं, इस से दूसरे को चाहे कैसा ही अनुचित दुख मिले, अथवा कैसी ही अनुचित हानि पहुंचे"। तब तक उसके भीतर केवल "मैं" का अधिकार रहता है। यह "मैं" का भाव जब तक काम करता है, और मनुष्य अपनी इसी "मैं" के द्वारा परिचालित होकर अपने किसी सुख वा आराम वा लाभ में किसी और की किसी अनुचित हानि वा उस के दुख को अनुभव नहीं करता और किसी और को अनुचित दुख वा हानि पहुंचाकर भी अपनी एक वा दूसरी प्रकार की तृप्ति ढूंढता रहता है, तब तक वह केवल "मैं" अर्थात् अंह का ही दास रहता है। इसी अंह के ही महा भयानक दासत्व से नाना प्रकार के पापों और अपराधों और अन्याय और अत्याचारों की उत्पत्ति होती है। यह अहं का दास और पर के सम्बन्ध में पूर्ण अबोधी चाहे किसी धर्म मत को मानता हो, चाहे किसी देवता वा देवी वा ईश्वर का इकरार करता हो, चाहे किसी पुस्तक को धर्म पुस्तक अथवा ईश्वर की पुस्तक कहता हो, चाहे किसी चीज़ का पाठ और पूजन करता हो, चाहे किसी प्रकार का तप वा जप करता हो, वह अवश्य पापाचारी और अपनी दुर्गति से अज्ञानी और विषय लिप्त अथवा मोह में लिप्त और निम्न श्रेणी का जीव अथवा नीच जीवन धारी आत्मा है।

.....सारी प्रकृति में दो प्रकार के दृश्य देखे जाते हैं। जहां रौशन तस्वीरें हैं, वहां काली तस्वीरें भी हैं। और यह दोनों एक नहीं। इस प्रकृति के चार बड़े विभाग हैं, अर्थात् भौतिक जगत, उद्भिद् जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत। इन चारों जगतों में ही दोनों प्रकार की तस्वीरें हैं। एक मकान ऐसा है, जिस में कलई और रंग हुआ है, और एक मकान है, कि जिस की दीवारों पर गोबर की पाथियां चिपटी हुई हैं, यह दोनों एक नहीं। उद्भिद् जगत में एक गेंहू आदि के पौधे हैं, कि जिनसे मनुष्य का शरीर पलता है, और दूसरी ओर धतूरे आदि के पौधे भी हैं, कि जिन का विष मनुष्य की मृत्यु का कारण होता है। पशु जगत में गाय, भैंस, घोड़ा, गधा और बकरी आदि हितकारी पशु भी हैं, और शेर, भेड़िया और सांप आदि की किस्म के हिंसक और हारिकारक पशु भी हैं। जहां ऐसे पशु भी हैं कि जो केवल औरों को खाकर

शेष पेज 6 पर

धर्म जीवन

खण्ड 23 अंक 6

जून 2010

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

रुहानी शत्रु

मैं बी. ए. पास कर चुका था। मेरे पास माननिय श्रीमान गुरूनरव्श सिंह जी बैठे थे, जब एक बहुत अच्छे चाल चलन का और मुझ से कुछ साल बड़ा, मेरा गहरा मित्र मिला। उसके चले जाने के बाद मैंने अपने मित्र का परिचय श्रीमान जी को करवाया कि यह मेरा एक ऐसा दोस्त है, जो मेरे ऊपर अपनी जान कुर्बान कर सकता है। इसकी संगत से मैं व्यायाम करने लगा हूँ, इसने मेरा बहुत भला किया है।

इस पर श्रीमान जी ने मुस्कराते हुए कहा कि भाई! जिसको तुम जांनिस्सार वा गहरा मित्र समझते हो, वह तेरा शत्रु है, वह तो अपना ही मित्र नहीं, तेरा मित्र कहां से बन गया? तुझे हृदय के अन्धेरे के कारण ऐसा दिखाई देता है। सचाई यह है कि न तो वह तेरा मित्र है और न तूं उसका मित्र है। तुम मित्र रहकर भी एक दूसरे के शत्रु हो।

एक हितकारी के मुंह से यह बात सुनकर जैसे मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गई। मेरी सारी सोच ही झूठी सिद्ध हुई।

मनुष्य बड़ा दुर्बल है। अदना सुखों का दास है। वह पढ़ा लिखा होकर भी, बड़ी उमर का होकर भी, शरीफ होकर भी यह देखने योग्य नहीं होता कि "कहां मेरी भलाई है, कहां मेरी तबाही है" या "कौन सच्चा प्यारा है, और कौन सच्चा सहारा है? कौन जीवन का रक्षक है, कौन जीवन विकासक है" मनुष्य सुख अनुरागी होकर, जहां से उसे सुख की तृप्ति हो, उसी को अपना मित्र समझने वा विश्वास करने लगता है। ऐसी सोच को ठीक समझने के लिए मजबूर है।

हक़ीक़त यह है कि मनुष्य अकसर अपने अस्तित्व के शत्रुओं को साथ, अपने जीवन, अपनी रुह के हानिकर्ताओं के साथ घिरा रहता है। सुख अनुरागी प्रकृति उसको वास्तिवकता देखने ही नहीं देती। एक बहुत नेक, शरीफ, ईमानदार सांईस मास्टर साहिब बहुत देर से सत्संग में आते थे, मैंने पूछा मास्टर जी, आप शराब तो नहीं पीते? उन्होंने उत्तर दिया कि मैं वैसे तो शराब मांस बिल्कुल प्रयोग नहीं करता परन्तु साल में एक दो बार मेरे बहुत प्यारे निकटी रिश्तेदार आते हैं, उस समय उनकी खुशी के लिए चन्द दिन मैं शराब, मांस का प्रयोग

करता हूं।

मनुष्य को आत्मिक अन्धेरे में अपना शरीर और शारीरिक सुख दिखाई देते हैं, उनकी उसे बहुत कीमत है, परन्तु उसे अपनी मुख्य वा सार वस्तु की महा हानि का कुछ ज्ञान नहीं, उस हानि की भयानक तस्वीर नज़र नहीं आती, उसके परिणामों की कोई सोझी नहीं, इसलिए मनुष्य को शारीरिक सुख देने वाले सामान और आदर देने वाले सम्बन्धी बहुत प्यारे और कीमती नज़र आते हैं, परन्तु वास्तव में वह हानि करने, रुह पर डाका मारने वाले, उसको महा हानि पहुंचाने वाले दिखाई नहीं देते।

यही कारण है मनुष्य हृदय के अन्धेरे के कारण हमेशा रुहानी डाकूओं से घिरा रहता है और अपनी मुख्य और सार हस्ती रुह को हानि पहुंचाता रहता है और तृप्त रहता है।

मनुष्य का सच्चा मित्र वा हितैषी वह है जो आत्मा की पाप वा झूठ से रक्षा करे, सत्य और शुभ कर्म करने का साथी बनें अर्थात रुह का सच्चा भला करने वाला ही सच्चा मित्र है, जो ऐसा नहीं करते वह रुहानी शत्रु ही होते हैं।

सुख अनुराग मनुष्य को अन्धा करके उल्टा दृष्टा बना देता है। सुखदायक सम्बन्धियों को कीमती और हित करने वाले खराब वा बुरे नज़र आते है। शत्रु दिखाई देते हैं। यही कारण है कि संसार दुखों से भरा पड़ा है।

परम पू० भगवान सुखों के अनुरागी नहीं थे, वह एक नई रोशनी लाए हैं, उनकी रोशनी पाकर ही मनुष्य को नई दृष्टि प्राप्त होती है और हो सकती है।

एक रिटायरड प्रिंसीपल साहिब ने बताया कि बचपन में उनके पड़ोस में स्त्री रहती थी जो उन्हें बहुत प्यार करती थी। सुख की चाट देकर वह हमसे छोटे मोटे काम करवा लेती। हम उसके पास ही रहना चाहते। हमारी माता जी ने जो पू० भगवान की सेविका थी, हमें बिठाकर समझाया कि "जो औरत मां से अधिक प्यार देने का ढ़ोंग करे वह डायन होती है, मां नहीं हो सकती। मां की यह बात हमें सदा रोशनी देती रही है।

श्रद्धेय कुमारी प्रेम देवी जी जैसी योग्य महिला सदियों में ही पैदा हो सकती है। उनकी ज्योति भरपूर बाणी सदा हमारा पथ प्रदर्शन कर सकती है।

वह फरमाती हैं:-

"भगवन आपकी कितनी बड़ी कृपा कि आपने धर्म मार्ग खोल दिया। जीवन ज्योति का दान देकर, जीवन की उच्च गति वा नीचगति का भेद खोलकर, जीवन की विकासकारी वा विनाशकारी गति का भेद मेरे सामने प्रगट कर दिया है, जीवन को उच्च अवस्था में ले जाने के लिए, जीवन को उच्च, पवित्र और श्रेष्ट जीवन बनाने के लिए, कोई भी यदि सहायता दे सकता हो, कुछ भी सहायकारी हो सकता हो, वही सच्चा सहारा, वही सच्चा मित्र है, वह चाहे बाप हो, भाई हो, बहन हो, धन हो, चाहे दौलत हो, पति हो चाहे पत्नी हो, पशु हो, वृक्ष हो, जड़ हो या चेतन। जीवन को नीच अवस्था में ले जाने के लिए, नीच बनाने, नीच इछाएं वा

नीच वासनाएं, नीच भाव बढ़ने में जो सहायता करे, वह शत्रु है, दुश्मन है, वह खूनी है, कातिल है। आपने यह महां गूढ़ भेद मेरे सामने प्रगट कर दिया है।"

"हे दाता! क्या करुंगी ऐसे धन को लेकर, ऐसे सम्बन्धी को लेकर, ऐसे माता पिता को लेकर, ऐसे ऐश ईशरत के सामानों को लेकर, जो मुझे इस विश्व से मिटाने का काम करते हों, जो मुझे ही महा भयानक दुखों और क्लेशों का भागी बना देने का कारण बनते हों"

उक्त बाणी से साफ पता लगता है कि माता, पिता, भाई बहन, पति पत्नी हमारे रुहानी दुश्मन हो सकते हैं यदि वह हमें उच्च जीवन में, आत्मिक रक्षा में वा आत्मिक विकास में सहायक नहीं होते।

जो सम्बन्धी उच्च संगत, उच्च धर्म सम्बधियों, उपकारियों हितकारियों, अद्वितीय गुरू के साथ, उच्च साहित्य के साथ जोड़ने में सहायक नहीं होते, वह चाहे माता पिता हों, भाई बहन हों पति पत्नी हों, वह नीच होते हैं। आत्मिक डाकू होते है।

डा० चन्दूलाल जी की धर्म पत्नी, श्रीमती किशनी देवी जी, अपने सुखों के विरूद्ध हालात देखकर, गुरू महाराज को, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को और उच्च कर्मचारियों को, देव आश्रम को जोरदार घृणा करती थी। अपने सिर के बाल खोलकर गुरू महाराज के आश्रम में स्यापा करती थी और कहती थी कि "भूतनों, तुम्हारा कुछ न रहे"। शुक्र यह हुआ कि डाक्टर साहिब देखते थे कि उनकी पत्नी की सोच ठीक नहीं, गुरू और श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जैसी महान हस्तियां ऐसे व्यवहार की हकदार नहीं। वह अपनी पत्नी जो उनकी आत्मिक शत्रु सिद्ध हो रही थी, उसके गुलाम वा कैदी नहीं रहे। इस बात में उसके साथी नहीं बनें। वह अपना सारा दिल खोलकर श्रीमान जी को बताते रहे। उनका कहना मानते रहे, परिणाम यह हुआ कि न केवल डाक्टर चन्दूलाल जी का बेहद भला हुआ, परन्तु उन धर्म सम्बन्धियों ने उस स्त्री का भी बेहद भला कर दिया। उसने देव समाज की संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त की, सेवा के कामों में लग गई, स्यापे करने के स्थान पर गुरू महाराज जब फिरोज़पुर पधारे तो उन्होंने श्रद्धा पूर्वक स्वागत का एड्रैस पढ़ा और धन्य धन्य अनुभव किया।

गुरू महाराज ने अपनी रोशनी में फरमाया है "सब से बढ़कर वह सम्बन्धी, उच्च जीवन जो देवें दान" इस सम्बन्ध में सरदार हरनाम सिंह जी साहिब का गुरू महाराज की सेवा में एक पत्र बड़ा ही शिक्षा-प्रद है।

"हे भगवन! आज निज के साधन में मुझे आपकी ज्योति में, आप की शरण में आने से पहले की मेरी अपनी काली तस्वीर नज़र आई। उसका भयानक नज़ारा सामने आने से मेरा दिल कांप उठा। उन बेकस जानवरों की भोली भाली शक्लें एक के बाद एक नज़र आई, जिनको मैंने बुरी तरह तड़पाया और खाया था। वह अपने मित्र (परन्तु वास्तव में मेरे आत्मा के दुशमन) सामने आए कि

जिनका स्वागत मैं दिल जान से करता था। जिनकी हर प्रकार की सेवा में हाज़िर रहता था। जिनके साथ शराब निकालते और मिलकर पीते थे। जिनके पाप कर्मों में पूरा पूरा साथ देता था। जिनकी सेवा में मेरे नौकर और मेरे घर के सब मैंबर लगे रहते थे। वह अब आपकी कृपा से मेरे घर में कदम रखने की हिम्मत नहीं कर सकते। अब उनके स्थान पर घर में उच्च सेवक तशरीफ लाते हैं। मेरा और मेरे परिवार का नाना पहलुओं में बहुत हित साधन करते हैं। मैं एक एक समय अपने आप को उच्च असरों से घिरे रहकर सन्तुष्टि महसूस करता हूं और आपको धन्यवाद देता हुआ तृप्त नहीं होता। आप ने सचमुच रुहानी शत्रुओं से बचाकर अपने पैदा किए मेरे आत्मा के लिए हितकारी और उपकारी आत्माओं के साथ जोड़ दिया। इस प्रकार मेरी काया पलट दी। मेरे पास शब्द नहीं कि आपका कैसे धन्यवाद करूं। काश! मैं अधिक से अधिक आपका और आप द्वारा पैदा किए हुए धर्म सम्बन्धियों की कदर कर सकूं।

(बलदेव सिंह)

पेज 2 का बाकी

जीते हैं, वहां ऐसे पशु भी हैं, कि जो औरों की सेवा करते हैं। इसी प्रकार मनुष्य जगत में भी दोनों प्रकार के मनुष्य हैं। झूठे धोखेबाज़, निर्दयी, चोर और डाकू आदि किस्म के मनुष्य हैं, कि जो दूसरों को हानि पहुंचाकर खुशी हासल करते हैं, और ऐसे मनुष्य भी हैं, कि जो दूसरे के हित और सुख के लिए एक वा दूसरी प्रकार का त्याग स्वीकार करते हैं। नेचर में जहां खुदगर्ज़ी है, वहां पर सेवा भी है। एक एक चिड़िया जो सख्त गरमी के दिनों में हांपती हुई कहीं से कोई दाना उठाकर लाती है, और उसे न खाकर अपने बच्चे को खिलाती है, यह नेचर में पर के लिए त्याग के भाव का प्रत्यक्ष दृष्टान्त है। चिड़िया अपने बच्चों से कोई दुनियावी गरज़ नहीं रखती, कि यह बड़े होकर मेरी यह वा वह सेवा करेंगे, किन्तु केवल वात्सल्य भाव से ही उसकी पालना करती है। तब प्रकृति में दोनों प्रकार के दृश्य वर्तमान हैं, अर्थात् विनाशकारी भी और विकासकारी भी। अब यह मनुष्य के लिए है, कि उन्हें पहचानकर अपने लिए चाहे विनाशकारी पथ अवलम्बन करे और चाहे विकासकारी।

मनुष्य में योग्यता होने से उच्च संग के प्रभावों से बहुत परिवर्तन आ सकता है। देव.... धर्म में ऐसे सेवक हैं, कि संगत में आने से पहले शिकारी थे, व्यभिचारी थे, चोरी और ठग थे, कपटी और छली थे, इत्यादि इत्यादि, परन्तु देव धर्म प्रवर्तक की ज्योति और शक्ति के कार्य से उनके भीतर की यह नीचता दूर हुई है, और उसके स्थान में कई एक सद्भाव उनके भीतर उत्पन्न हुए हैं। तब नेचर के इन नियमों को तुम लोग पहचानो और जो पूर्ण धर्मावतार तुम्हें मोक्ष और जीवन दान देने के लिए प्रगट हुआ है, उसकी शरण लेकर उसके इस महादान को लाभ काने के योग्य बनों।

कातिल बनने से बचें

हम यह प्राय: सुनते और मानते हैं कि हत्या करना बहुत बड़ा अपराध है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हंसती खेलती ज़िन्दगी को ख़त्म कर देना, उसके निकटी सम्बन्धियों को उसकी जुदाई से तड़पा देना, उसके छोटे छोटे मासूम बच्चों और उसकी नौजवान पत्नी को उसके सहारे से वंचित कर देना, कई माताओं से उनके इकलौते पुत्रों को जुदा कर देना, यह बहुत बड़ा अपराध है। इसलिए हमारी समाज में ऐसे अपराधियों को सज़ा दी जाती है, उसको तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है, उसको नीच, कमीना, पापी और समाज के लिए कलंक समझा जाता है।

परन्तु मनुष्य समाज में इससे भी घिनौने पापी हैं, जिनके लिए न कोई कानूनी सज़ा है और न ही उनको फिटकारा जाता है, उल्टा उनमें कई ऊंचे पदधारी भी होते हैं, कई बार वह हमारे निकटी सम्बन्धी भी हो सकते हैं।

कई वर्षो की बात है कि मुझे एक संस्था में जाने का अवसर मिला वहां एक बज़ुर्ग काम करते थे, वह बेहद मेहनती, ईमानदार और नम्र स्वभाव के मालिक थे, उन गुणों के कारण वह बहुत सन्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। उनके बिमार होने का हमें पता लगा तो अपने सन्मान वा श्रद्धा को प्रगट करने के लिए हम उनके घर गए। वह चारपाई पर बहुत निढाल पड़े हुए थे। हमने प्रणाम किया और उनका हालचाल पूछने लगे। हमारे पूछने की देर ही थी कि वह फूट फूट कर रोने लगे। हम घबरा गए, हमदर्दी की और उन्हें प्रार्थना की कि वह अपना दुख हमें बताएं, यदि हम उसे घटाने में कुछ सहायक हो सकें। उन्होंने आख़िर हमें अपना सच्चा हमदर्द समझ के अपना दुख इस प्रकार बताया, "मैं रिटायर होकर कई वर्ष एक स्थान पर काम करता रहा। उस संस्था के इंचारज मेरे बेटों जैसे थे और मेरा बहुत सन्मान करते थे। मैं भी उनके लिए बहुत सन्मान और स्नेह रखता था। परन्तु कुछ कारणों से अब उन्हें मेरी ज़रुरत नहीं थी। वह मुझे जवाब देना चाहते थे, परन्तु जिस अपमान मूलक ढंग से उन्होंने मुझे वहां से निकाला उससे मेरा दिल छलनी छलनी हो गया। मुझे निकाले जाने की तकलीफ नहीं परन्तु बिना कसूर के जिस प्रकार का व्यवहार दिया गया, उससे मेरा दिल काबू में नहीं रहा" यह कहकर वह फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। फिर उन्होंने बताया, "यदि वह जन जिसको मैं बेटे के समान समझता था, मेरे से अपने उस ग़ल्त व्यवहार के लिए क्षमा मांग ले तो मैं शान्ति से मर सकता हूं।" उनके इन शब्दों ने मेरे दिल को हिला दियां उस समय भी और आज भी मैं यह अनुभव करती हूं कि यह एक आत्मिक मौत है। जो शारीरिक मृत्यु से भी अधिक दर्दनाक है। कातिल एक ही बार हत्या करके शारीरिक

यातना से छुटकारा दिला देता है, परन्तु यह मौत तिल तिल करके मारती है। इससे भी बढ़ यह कि ऐसे हत्यारे समाज में हंसते खेलते नज़र आते हैं और सन्मान की ज़िन्दगी जी रहे होते हैं।

लखनऊ में एक मुख्य अध्यापक के विषय मे खबर छपी थी कि उन्होंने एक लड़के को बहुत डांटा, जिसके कारण वह लड़का बहुत अधिक सहम गया और बिमार हो गया। डाक्टर उसका ईलाज करते रहे, परन्तु वह ठीक नहीं हो रहा था। डाक्टर ने कहा कि यदि वह मुख्य अध्यापक इस लड़के के पास आकर अफसोस प्रगट कर दे और इसे प्यार और हौसला दे तो यह लड़का बच सकता है। माता पिता ने बड़ी प्रार्थनाएं की कि किसी प्रकार वह मुख्य अध्यापक मान जांए, परन्तु वह पत्थर दिल इन्सान नहीं पिघला। अख़िर वह बच्चा अपने रोते पीटते माता पिता को छोड़कर इस निर्दयी दुनियां से कूच कर गया। कुर्सी और हकूमत के जोश में क्या यह मुख्य अध्यापक यह समझ सका कि वह इस मासूम बच्चे का हत्यारा है। बेशक उसने उसके शरीर को ख़त्म ही नहीं किया, परन्तु उसकी रुह को लहुलुहान कर दिया। किसी अबला, बेसहारा, अपने से छोटे और अपने अधीन किसी मनुष्य के लिए जब हम अपने पद प्रभुत्व के नशे में अन्धे होकर कड़वे शब्द बोलते है, उसे डराने धमकाने के लिए गरजते हैं या अपनी कलम से दिल को तोड़ने वाले शब्द लिखते हैं, तो वह नम्र कोमल रुह कैसे तड़पती है, उसका एहसास भूल जाते हैं, ऐसी अनगिणत घायल रूहें हमारी जान को रोती रहती हैं, परन्तु उस समय घंमड के नशे में हम पत्थर हो जाते हैं।

मैंने भी मुख्य अध्यापक के रूप में काम किया है, मुझे भी बच्चों के प्रति ऐसी घटनाएं देखने को मिली हैं। एक बार मैं स्कूल के किसी काम से आधी छुट्टी से पहले अपनी वाईस प्रिंसीपल के साथ किसी आफिस में गई हुई थी। जब आधी छुट्टी खत्म होने पर हम वापिस आए तो देखा कि वहां जमघट लगा हुआ है, सारी अध्यापिकाएं इकट्ठी हुई थीं तो उन्होंने बताया कि 10वीं कलास की दो लड़कियाँ आधी छुट्टी में आपस में लड़ पड़ी। एक लड़की ने दूसरी लड़की को मारा है, वह बिचारी रो रही है। रो रही लड़की के साथ सबकी हमदर्दी थी और दूसरी लड़की को सबने खूब डांटा। मैंने सबको क्लासों में भेजा और दोनों लडकियों को बुला लिया और सारी बात प्यार से दोनों से पूछी, क्योंकि साधारणत: कभी भी लड़कियों की इस प्रकार की लड़ाई स्कूल में नहीं होती थी। सारी बात सुनने के बाद बिल्कुल साफ़ हो गया कि मार खाने वाली लड़की का भी उतना ही कसूर था। ऐसे समय माननीय कनल जी की उस घटना ने कि अपने बच्चे को रोते देख़कर उन्होंने तैश में आकर बिना जाने, उसी बच्चे के थप्पड़ लगा दिया था, जिस बच्चे ने बचाया था, सदा मेरी रहनुमाई की है। जिस लड़की ने मारा था, मैंने उसको भी प्यार किया, दूसरी को भी समझाया कि जब तुमने इतने गन्दे शब्द

कहे तो वह तेरे से ताकतवर है, तो उसने तुम्हें मार दिया, उसको भी ग़ल्ती का एहसास दिलाया। परन्तु जब मारने वाली लड़की ने यह कहा, "मैडम यदि आज आप मुझे प्यार से न समझाते तो मैंने आज आत्म हत्या कर लेनी थी, जिस प्रकार सबके सामने केवल मुझे ही अध्यापिकाओं ने बेइज्जत किया था" यह सुनकर मेरे तो पैरों तले से ज़मीन निकल गई, फिर मैंने उसे और प्यार किया। मैंने यह अनुभव किया कि हमारे अन्दर दया, न्याय और दूसरों का ख़्याल रखने की कमी हमें किस प्रकार पक्षपाती बना देती है। एक तरफ की बात सुनकर दूसरे पर हम किस प्रकार अत्याचार कर देते हैं, जिसके परिणाम कई बार बहुत भयानक होते हैं।

एक बहुत गुणवान, सूझवान और विद्वान स्त्री की ज़िन्दगी मेरी आंखों के सामने आ गई, जो अपने परिवार के लिए एक हीरा थी। परन्तु उसकी बदकिस्मती कि उसके सुसंराल में उसे इतने दिल शिकन व्यवहार मिले, इतनी कड़वी बोलियां सहन करनी पड़ी कि आखिर कुछ वर्षो में उसकी स्नायु-प्रणली इतनी कमज़ोर हो गई कि वह चारपाई पर पड़ गई। धीरे धीरे वह कमज़ोर और असहाय होकर बहुत दर्दनाक मृत्यु को प्राप्त हुई, परन्तु पत्थर दिल उसके पति को कभी यह अनुभव नहीं हुआ कि वह उस कीमती रूह के कातिल हैं।

कई बार हम बहरूनी रूप से कुछ भी बुरा करते दिखाई नहीं देते, कई बार अच्छा व्यवहार देने का ढोंग भी करते हैं, परन्तु किसी की झूठी निन्दा करके, झूठे इल्जाम लगाकर और लोगों में फैलाकर, अपने स्वार्थ के लिए बदनाम करके, विश्वासघात करके अपने झूठे, घमंड और अपने स्वार्थ की तृप्ति तो अवश्य करते हैं, परन्तु हम अपने व्यवहार से दूसरी रुह को घायल कर देते हैं, यह हमें अपने शराफत के लिबास में रत्ती भर भी अनुभव नहीं होता। किसी का सुख, किसी की शान्ति, किसी का आराम, सन्मान, पद, अधिकार और स्वास्थ्य आदि का अपहरण करके भी हम कातिल बनते हैं।

हम अपने भीतर दृष्टि डालें कि कहीं हम ऐसे कातिल तो नहीं? किसी के दुख दर्द को बांट सकें न कि उसको दुखी करके, अशान्त करके अपनी खुशी ढूंढें। यदि किसी ज़िम्मेवारी के अधीन कभी किसी के लिए कुछ कठोर होना भी पड़ता है, तो जल्दी ही किसी और ढंग से उसके साथ हमदर्दी करके उसके दिल के दुख को घटा सकें। अपने आप को उसकी जगह पर रखकर तो देखें। जब हम दूसरों पर कहर ढाते हैं तो हम खुश होते हैं, जब अपने पर वह हालात बीतते हैं तो दुखी तो अवश्य होते हैं, परन्तु फिर भी कई बार अपने व्यवहारों से सन्तप्त रूहों के दुख की याद नहीं आती। किसी प्रकार हम देवता तो क्या हैवान न बनें और सच्चे अर्थो में इन्सान बन सकें।

सुरजीत बराड़

धूमपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

"धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" इसे सिद्ध किया है 69 वर्षीय विशुद्ध शाकाहारी अर्न्तराष्ट्रीय मास्टर एथलीट श्री किशनसिंह जी चौहान ने।

जिनकी चुनौती है, कि कोई भी 50 वर्ष से अधिक उम्र का नशा - प्रेमी उनके साथ 20 किलोमीटर दौड़ कर अपना दम - खम आजमा सकता है। जीतने वाले धूम्रपान प्रेमी को श्री चौहान जी एक हजार रूपये का नकद पुरस्कार देंगे, तथा हारने पर उस व्यक्ति को केवल कोर्ट अनुबन्ध के अनुसार आजीवन धूम्रपान का त्याग करना होगा।

उल्लेखनीय है कि गत 25 वर्षो से अनेकों धूम्रपान प्रेमियों ने श्री चौहान जी के साथ दौड़कर अपना दमखम अजमाया, परन्तु सभी को पराजय स्वीकार करनी पड़ी। 69 वर्षीय श्री चौहान इस उम्र में भी प्रतिदिन 10 कि.मी. की दौड़ लगाते हैं। तेजपाल प्रतियोगिता के वेटरन एथलीट श्री चौहान जी, जिला स्तरीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय, एवं एशियाई 3 K.M., 5 K.M., 10 K.M., तथा 20 K.M. के स्वर्ण पदकों के साथ एशियाई मास्टर एथलैटिक्स प्रतियोगिताओं में रिकार्ड होल्डर हैं।

वर्तमान में सात नाती - पोतों के बाबा वा नाना ने 28 वर्ष की उम्र में 2 बच्चों के पिता बनकर प्रथम बार अक्टुबर 1969 ई. में पटियाला में पंजाब सर्किल की डाक - तार खेल कूद प्रतियोगिताओं में 5 K.M.तथा तेज 10 K.M. चाल (पदचालन) (पैदल चाल) प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त कर, 12 दिसम्बर 1969 ई0 को अखिल भारतीय डाक - तार विभाग की 5 K.M. तेज चाल प्रतियोगिता मद्रास में स्वर्ण पदक प्राप्त कर, आठवीं राष्ट्रीय ओपन एथलेटिक चैम्पियनशिप अजमेर मे 20K.M. तेजचाल प्रतियोगिता में एशियाई विजेताओं के दान्त खट्टे कर दिए इस प्रतियोगिता में आज से 40K.M. वर्ष पूर्व दर्शकों के लिए पाँच रुपए टिकट था। 5K.M. तक तो श्री चौहान राष्ट्रीय खिलाड़ियों (श्री बचनसिंह व श्री किशन सिंह) को पछाड़ते चले गऐ परन्तु प्रथम वर्ष 20K.M. walk का अभ्यास न होने के कारण पिछड गए और पाँचवे स्थान पर ही संतोष करना पड़ा।

वर्ष 1970 में अखिल भारतीय डाकतार खेल कूद कलकत्ता मे 20K.M. पैदल चाल प्रतियोगिता में रजत पद्क पाने वाले श्री चौहान प्रति वर्ष ही सिलवर व गोल्ड मैडल प्राप्त करते चले आ रहे थे तो 45 वर्ष की उम्र पार होने पर उन्हें ज्ञात हुआ कि 40 वर्ष से अधिक उम्र वालों की एथलेटिक्स प्रतियोगिताएं, प्रान्तीय राष्ट्रीय एशियाई और विश्व स्तरीय प्रतियोगिताएं आयोजित होती है। वर्ष 1988 में श्री चौहान जी ने कानपुर में उ० प्र० तथा हिसार में 5 व 10 20K.M. walk में राष्ट्रीय रिकार्ड बनाकर 3 स्वर्ण पदक प्राप्त किए।

वर्ष 1988 ई० में आपका चयन हांगकागं में अर्न्तराष्ट्रीय वैटरन एथलेटिक्स चेम्पियनशिप के लिए हुआ।

15 अक्टुबर 1988 ई० को वान स्टेडियम हांगकागं में 3K.M. walk प्रतियोगिता में न केवल स्वर्ण पदक प्राप्त किया बल्कि ब्रिटिशर के 15 मिनट 58 सैंकड के रिकार्ड को तोड़कर 14 मिनट 52 सैंकड का नया रिकार्ड बनाया।

वर्ष 1990 ई० में भारत में 10 व 20K.M. walk के स्वर्ण पदक जीतकर क्वालालम्पुर (मलेशिया) में 10K.M. में सिलवन मैडल मिला।

वर्ष 1993 ई० में दसवीं विश्व वेटस एथलेटिक चैम्पयिनशिप जापान में 5 व 20 में क्रमश: चौथा व दसवां स्थान पाकर विश्व के में Best

of ten में भारत का नाम अंकित कराया।

वर्ष 1995 में कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में राष्ट्रीय वेटस एथलेटिक चैम्पियनशिप की 5K.M. व 10K.M. walk में एशिया का रिकार्ड तोड़ा। तथा 50 + age group में 5K.M. व 10 K.M. में क्रमश 25. 50Minuts तथा 52.10 Minuts. में नया कीर्तिमान बनाया।

वर्ष 1998 में सिमोल (दक्षिणी कोरिया) में 6 K.M. walk का नया एशियाई रिकार्ड बनाया।

वर्ष 1997-98 की All India Tlecom Athletic Championship में 20K.M. walk में Gold medal प्राप्त किया तथा 56 वर्ष की उम्र में एक 28 वर्षीय नौजवान को लगभग 1/2 पीछे पछाडा।

वर्ष 1998 से सर्विस (Telegraph Master Departmental Telegraph Office Roorkee) से 4 वर्ष पूर्व ही स्वेच्छित रिटायरमेन्ट लेकर अवैतनिक रूप से देवसमाज श्री अकबरपुर (कानपुर) 20.9.01 में सेवा रत हैं। (1) भजनमाला (2) देवदर्पण (3) स्वस्थ्य-दर्पण तथा (4) "उच्चतम प्रेरणाओं के अमृत-स्रोत परम पूजनीय भगवान देवात्मा" संकलित व सम्पादित करने का सौभाग्य प्राप्त है। इन्डोनेशिया जापान व सिमोल में देवधर्म की अंग्रेजी पुस्तकें लाइब्रेरियों में रखने का सौभाग्य मिला। जाटोंवाला (सहारनपुर) रुड़की एवं श्री अकबरपुर में साधन मन्दिर व कम्प्युटर रूम बनवाने हेतु धर्म सम्बंधियों से 20 लाख रुपए से अधिक दान माँगने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इनका यह संग्राम बहुत सराहनिय है

नवीननगर
सहारनपुर।

जीवन प्रंसग

1) जब क्रोधी आदमी ने बुद्ध के मुंह पर थूक दिया :- महात्मा बुद्ध उपदेश दे रहे थे- क्रोध एक प्रकार की अग्नि है, जिसमें उसे धारण करने वाला स्वयं ही जलता रहता है। उस अग्नि से वह दूसरे को जलाएगा, इससे पहले खुद बहुत कुछ जल जाता है। उनका उपदेश एक अत्यंत क्रोधी व्यक्ति भी सुन रहा था। उसे क्रोध के विरुद्ध बुद्ध का उपदेश तनिक भी अच्छा नहीं लग रहा था। इसलिए वह खड़ा होकर कहने लगा। अरे पाखंडी! तू बड़ी-बड़ी बातें करता है। इस पर अमल करके भी बता। लोगों को व्यवहार के विरुद्ध बातें बताते शर्म नहीं आती? उसकी बात सुनकर बुद्ध शांत रहे। वह और अधिक क्रोधित हो उठा। उसने उनके पास आकर उनके मुंह पर थूक दिया। बुद्ध ने अपना चेहरा पोंछा और उससे पूछा- तुम्हें और क्या कहना है? वह बोला- मैं कुछ कह रहा हूं? बुद्ध बोले- हां, तुम्हारा इस प्रकार का बर्ताव तुम्हारी घृणा की अभिव्यक्ति है। वह और अपशब्द कहते हुए वहां से चला गया। अगले दिन बुद्ध दूसरे गांव में चले गए। अब तक उस व्यक्ति का क्रोध शांत हो चुका था और उसे पश्चाताप हो रहा था। वह बुद्ध को खोजते हुए उस गांव में आया और उनके चरणों में लोटते हुए बोला-मुझे क्षमा कीजिए, मैंने कल आपके साथ अभद्रता की। बुद्ध ने उससे पूछा- क्या हुआ? कौन हो तुम? क्रोधी चौंककर बोला- आप भूल गए! मैं वही दुष्ट हूं, जिसने आप पर कल थूका था। बुद्ध ने हंसकर कहा- कल को तो मैं कल ही छोड़ आया हूं। हर बुरी बात या घटना को याद रखा जाएगा तो जीवन और भविष्य, दोनों ही ठहर जाएंगे। संकेतार्थ यह है

कि हमें धरती की भांति क्षमाशील होना चाहिए। इससे समस्त संसार खुद-ब-खुद हमारे चरणों में झुक जाएगा।

2) एक बार ख़लीफा उमर भाषण दे रहे थे। कह रहे थे कि आदमी को ईमानदार होना चाहिए। उनकी यह बात सुनकर एक औरत बोल पड़ी "क्या आप ईमानदार हो? आपने जो लम्बा चोला पहन रखा है, वह क्यों? मेरे पति का चोला कन्धों को भी मुश्किल से ढकता है। इससे साफ ज़हिर होता है आपने शाही खजाने से अपने हिस्से से अधिक कपड़ा हासिल किया है।

औरत की बात सुनकर ख़लीफा उमर ने कहा, "मुझे पता नहीं मेरा चोगा इतना लम्बा क्यों है? मेरा बेटा इसका उत्तर दे सकता है।"

खलीफा के ईशारे से बेटा सामने आया और बोला "मैंने अपने हिस्से का चोगा अपने पिता को दे दिया है, इसलिए उनका चोगा इतना लम्बा हो गया। देखो! मेरे पास कोई चोगा नहीं। औरत डर गई कि पता नहीं उस गुस्ताख़ी की क्या सज़ा ख़लीफा उसको देंगे?

उल्टा ख़लीफा बोले, जब तक इस औरत की तरह ईमानदार और निडर होकर अपने दिल की बात कहने वाले मौजूद हैं, तब तक हमारे धर्म को कोई खतरा नहीं।

3) आस्था के अनुरुप ही परिणाम मिलता है:- विश्वास की रचनात्मिक शक्ति द्वारा तुम उन हालातों को प्रेरित करते हो, जो तुम्हारी इच्छा को पूरा करने से सम्बन्धित घटनाओं को जन्म देती हैं। यह एक पक्का सिद्धान्त है "जितना विश्वास पक्का होगा, उतनी सफलता मिलेगी" यदि स्वंय पर, अपने काम पर, अपने देश में वर्तमान अवसरों पर और अपने लक्ष्य की महानता पर पूरा विश्वास होगा, फिर आप सख़्त मेहनत करोगे, दूसरों से सीखोगे, अपने काम के प्रति समर्पित होकर उस मंजिल तक पहुच सकोगे, जिसकी तुमने कल्पना की है।

जब भी सामने कोई रुकावट आएं रुक कर अपनी आंखे बन्द करके हर उस वस्तु की कल्पना करो जो उस रुकावट से ऊपर है। नीचे की तरफ न देखो, फिर उस रुकावट से अपने आपको ऊपर सोचने का यत्न करो, तो ऊपर ले जाने वाली शक्तियां आपकी सहायक होंगी, तो उस रुकावट को दूर करने के लिए तुम्हें सहायता मिलेगी, यह बात तुम्हें हैरान कर देगी। आप अपनी कल्पना शक्ति मे जितनी ऊंची उड़ान भरते हो और अपने विश्वास का प्रयोग करके उसके लिए संघर्ष मे लग जाते हो, तो आपको सवश्रेष्ट मिलेगा। परन्तु इस सारी प्रक्रिया में यह जानना ज़रुरी है कि तुमने जाना कहां। है, लक्ष्य तक तो ही पंहुच सकते हो, तुम्हारे सपने तो ही सच्चे हो सकते हैं। यदि तुम्हारा लक्ष्य ऊंचा हो और स्पष्ट हो, यह बात बहुत महत्पूर्ण है।

बिना लक्ष्य निश्चित किए सर्वश्रेष्ट परिणामों की आशा नहीं की जा सकती।

नार्मक विन्सैंट

4) एक डाकू साधु के वेश में रहता था। डकैती में मिला अधिकांश धन वह निर्धनों में बांट देता था। एक दिन व्यापारियों का एक समूह डाकुओं के ठिकाने के पास से गुजर रहा था। सभी व्यापारियों को डाकुओं ने घेर लिया। नजर बचाकर एक व्यापारी अपने धन की थैली लिए भाग और एक

शेष पेज 19 पर

पाठकों का पन्ना

अम्बाला से एक पुरानी सेविका लिखती हैं -

विशेष विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी, सत्यदेव की जय। आपकी परिवार सहित सकुशल चाहती हूँ, मैं कुशल से हूँ। आपकी दोनों ही पत्रिकाएं मुझे समय पर मिल रहीं हैं दोनों के लेख अत्यन्त श्रद्धा योग्य होतें हैं जिनमें गुरू महाराज जी की ज्योति व तेज की किरणें अपना प्रकाश कर रही है। आदरणीय सुरजीत जी भी अपने उच्च जीवन से बहुत हितकर लेख लिखकर सेवाकारी हो रही हैं। आप दोनों का जीवन गुरु मिशन में सेवाकारी हो रहा है कि सब तरह के विघ्न बाधाओं से सुरक्षित रह कर स्वस्थ सेहत के साथ मेरे जैसे हजारों जनों का हित करते रहे हैं।

पिछले चंद महीनों से परलोक गमन का सिलसिला कुछ अधिक तेजी से चल रहा है। आदरणीय करतार कौर जी, प्रीतम कौर जी सबसे अच्छी तरह परिचित हूँ परन्तु खेद मिलने का अवसर पिछले कई सालों से नहीं मिल सका, आप अपने लेखों द्वारा उपकृत कर रहे हो। आपकी सेवा में निवेदन है कि फरवरी की दूसरी पत्रिका भेजने का कष्ट करें।

आप अपने संग्राम से कई क्षेत्रों का परिचालन कर रहे हो। जो जन आप के साथ सेवा कारी हो रहे हैं सब का धन्यवाद।

सेवक जगजीत सिंह लिखतें हैं -

विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी सत्यदेव की जय। कुशलता के उपरान्त मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि आज अपने फोन पर वातचीत की, आप मुझ पर बहुत कृपा करते हो, जो मुझ नाचीज का हौसला बढ़ाते हो, और गुरू के और निकट लाने का प्रयास करते हो। आपको जितना धन्यवाद दें कम है। वैसे तो श्रीमान खेड़ा सिंह साहब के भी हम आभारी हैं जो अपनी सेवाऐं चुपचाप ही करते रहते हैं, उसके बदले में ध न्यवाद लेने की भी उनके अन्दर बात नहीं है यानि कि वो गुरु महाराज के प्रति समर्पित हैं। मैं तो हर सुबह श्रीमान जी को अपने साधन में याद करता हूँ। शेष जितने भी धर्म सम्बन्धी और उपकारियों को भी स्मरण करता हूँ। इस सब का credit गुरू महाराज़ को ही जाता है। मेरे अवगुण तो मेरी कमजोरियों और त्रुटियाँ जो भी हैं मेरी अयोग्यता के कारण है और जो परिवर्तन हैं और होगा उस सब का श्रेय गुरू महाराज को ही जाता है।

दोबारा आपका बहुत - बहुत धन्यवाद: -

गुरू महाराज का तुच्छ सेवक -

जगजीत सिंह

क्षमा

हम प्रत्येक सम्बन्ध में अकसर गल्तियां करते हैं, परन्तु हम यह कहकर सन्तुष्ट हो जाते हैं कि मनुष्य गल्तियों का पुतला है। लेकिन विवेकशील वा महान उसको माना जाता है जो अपनी गल्ती को स्वीकार करे और अपनी गल्ती के लिए क्षमा मांग ले (कुछ इन्सान इतने कपटी भी होते हैं कि अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए झूठी क्षमा मांग कर अपना स्वार्थ पूरा करके अपने पहले रूप में आ जाते हैं) परन्तु यदि सच्चे दिल से कोई क्षमा मांग लेता है तो सामने वाले का गुस्सा ठण्डा हो जाता है। कुछ ही इन्सान ऐसे होते हैं कि जो क्षमा मांगने पर भी अकड़ दिखाते रहें या उल्टा सीधा बोलने लग जाएं, परन्तु सच्चे दिल की गहराई से क्षमा मांगने पर दूसरे का दिल अवश्य पिघलता है क्योंकि क्षमा करना भी मानविय स्वाभव है।

यह भी सच्च है कि क्षमा करना भी इतना आसान नहीं होता, उसके लिए भी बहुत बड़ा दिल चाहिए और सोच शक्ति भी। शास्त्रों में क्षमा को बड़प्पन और महा पुरुषों का गुण माना गया है। क्षमा का आदर्श पृथ्वी को माना गया है, जिसको हम जितना दिल चाहे दुख दे लें, हल की तेज नोक से उसका सीना चीर देते हैं, तो भी वह हमें आनाज देती है। क्षमा का आदर्श मां को भी माना जाता है, जो पुत्र से कपुत्र होने पर भी कुमाता नहीं बनती। गुरू वा शिक्षक को माना गया है, जो अपने विद्यार्थी की गल्ती को क्षमा करके ज्ञान का र्माग दिखाते हैं।

जैन धर्म में क्षमा मांगने का एक सप्ताह मनाया जाता है। इसमें वर्ष भर की गल्तियों के लिए क्षमा मांगी जाती है, दूसरों को क्षमा करने का भाव भी सिखाया जाता है। इसमें भी कोई शक नहीं कि ऐसी शिक्षा में चलने वाले जन कठोर हृदय भी देखे गए है, जो क्षमा करने वा क्षमा मांगने का ढोंग तो कर सकते हैं, परन्तु हृदय से न क्षमा मांग सकते हैं, और न क्षमा कर सकते हैं, क्योंकि जन्मजात प्रकृति को एक हफते में बदला नहीं जा सकता। परन्तु दिल से क्षमा मांगना मनुष्य की महानता का प्रतीक है, जो उसकी दीनता को दिखाती है।

अंहकार महा विष है। कपट, छल, फरेब और नीचता से मुक्ति के लिए इस अंहकार से मुक्त होकर क्षमा का भाव मन में लाना अवश्यक है। यदि हम किसी को दिल से क्षमा करेंगे तो हमारे मन में उसके प्रति गुस्सा, नफरत या दूरी का भाव कम हो जाएगा और वह जन भी प्रभावित होगा।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि हम किसी के साथ सद्भाव रखें और वह गुस्से से पेश आता रहे। किसी धारणा या गल्तफहिमी का शिकार हो, तो हमारा भाव ईसा मसीह की तरह ही हो कि "इनको क्षमा कर दो, क्योंकि यह जानते नहीं कि यह क्या कर रहें हैं", शायद आख़िर में उनकी दुरभावना भी ख़त्म हो सकती है।

कई बार देखने में आता है कि ताकत के, सत्ता के या धन के नशे में व्यक्ति अपनी भूल के लिए क्षमा मांगना तोहीन समझता है। वह झूठी प्रतिष्टा या दिखावटी भाव अकसर जीवन में समस्याएं पैदा करते हैं। इससे एक किस्म का समाजिक तनाव, नफरत और छल कपट का भाव घर कर जाता है, जिससे सामाजिक वा मान्सिक शान्ति ख़त्म हो जाती है। राजनीति में तो ऐसा होता ही है। मुंह से लोग राम का नाम लेते हैं और बगल में छुरी रखते हैं। राजनैतिक स्वार्थ में लीन आदमी तो क्षमा

करना कम ही जानता है। उसके लिए सत्ता सुख सबसे ऊपर होता है, बाकी सारे सुखों को वह इससे दूसरे दर्जे पर ही समझता है। राजनैतिक दोहरा आचरण रखते हैं। किसी कवि ने कहा है:-

"दुश्मनी की आग दिल में भरी, लब पर ठण्डक प्यार की क्या ख़बर थी कि आदमी, दो रुखा हो जाएगा"

ग़ल्तियोां या अपनी भूलों के लिए क्षमा का भाव रखने से अपने आस पास शान्ति और प्यार के साथ लोगों को जोड़ने का मार्ग साफ हो जाता है। यह सोच व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़नेकी महत्वपूर्ण कड़ी है।

आज जब सब ओर मनमानी करने, सबको अपनी मर्जी और अपने निहित स्वार्थ कारण पहले से तय मार्ग पर चलाने ओर न चले तो उसको ख़त्म करने की होड़ सी लगी हुई है, उससे सब ओर वैर भाव और नफरत बढ़ रही है। इस समय में अपनी भूलों और ग़ल्तियों को महसूस करके और दूसरों को उनकी ग़ल्तियों के लिए क्षमा करने से आपसी तालमेल का एक नया भाव पैदा हो सकता है। इससे सब ओर फैली कड़वाहट को शायद घटाया जा सकता है।

क्षमा-शील होने की पराकाष्टा

इस सन्दर्भ में परम पू० भगवान देवात्मा की क्षमा शीलता अतुल्यनिय है। उनमें बड़े से बड़े शत्रु, आघातकारी और उन्हें जां कन्दनी की हद तक सताने वालों के लिए भी गज़ब की क्षमा भावना थी।

देव रत्न ने 24 वर्ष पू० भगवान से अथाह सेवाएं पाई, परन्तु अपनी नीच प्रकृति वा नीच वासना के अधिकार में आकर ऐसी घिनौनी हरकत की कि उन्हें देव समाज से बाहर निकालना पड़ा, और बाहर जाकर द्वेष भाव से भरकर विरोधियों से मिलकर कृतघ्न बन गया और यहां तक ऐलान किया कि "देवगुरू साहिब मेरे हमलों से जांबर (बच) नहीं हो सकेंगे"।

ऐसे शख्स के लिए परम पू० भगवान ने फरमाया था कि यदि देव रत्न कहीं गिरा पड़ा मिल जाए तो "हम उसको उठाने वाले पहले शख़्स होंगे" कितना क्षमा-शील वा उदार हृदय!

मन्सा सिंह ने देव समाज हैडआफिस से कान्फीडैन्शियल पेपर चोरी करके विरोधियों को थमा दिए। बाद में जब उन्होंने अपनी गल्ती सुधारी और क्षमा मांगी तो पू० भगवान ने न केवल उन्हें क्षमा कर दिया बल्कि उनका अथाह हित किया। वह स्वंय लिखते हैं:-

"मैं आपके और देव समाज के सम्बन्ध में कितना बड़ा अपराधी! फौज में अगर कोई सिपाही ऐसा अपराध करे तो पता लगने पर उसको फौजी कानून के मुताबिक फौरन तोप से उड़ा दिया जाता है, परन्तु हे भगवान! आपका आर्विभाव बिल्कुल निराला है और आपका दरबार बिल्कुल अलौकिक है। मैं कहूंगा कि बजाय मौत के मुझे ज़िन्दगी देने का यत्न किया जाता है। बजाय तोप से उड़ाने के मुझे धर्म-विकासालय जैसी उच्च इन्सटीटूयूशन के महा कल्याणकारी प्रभावों से लाभ उठाने का अवसर प्रदान किया जाता है।" धन्य हैं भगवान!

शुभ संग्राम

श्री अकबरपुर :- श्रीमान बलदेव सिंह जी अपने 6 साथियों समेत 9.4.10. को कानपुर पहुंचे और सुबह 8 बजे फूल मालाएं लेकर श्री अकबरपुर पहुंचे। आते ही सबसे पहले परम पू० भगवान देवात्मा के पावन जन्म स्थान के आगे नतमस्तक हुऐ फिर जन्म स्थान के अन्दर पू० भगवान की छवि का बारी बारी हारों द्वारा अर्चन करके प्रणाम का साध न किया। फिर श्री चौहान साहिब ने श्रद्धा के भाव से बिभोर होकर हवेली के हर स्थान के दर्शन करवाए। हवेली से बाहर आने पर श्रीमान चौहान जी और अन्य जनों ने फूलों के हारों द्वारा यात्रा पार्टी का स्वागत कियां 10 बजे सुबह एक सभा रखी गई, जो श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि भारत के भीतर अनेक धर्म मत, धर्म स्थान और धर्म साधन हैं, इसके बावजूद नशे, मांसाहार, व्यभिचार, आंतक वाद, भृष्टचार बढ़ रहे हैं। जेलें, पुलिस, हस्पताल बढ रहे हैं। यह धर्म क्यों फेल हैं? क्योंकि इनके पास कोई ऐसा दर्पण नहीं जो मनुष्य का उसका सच्चा आत्मिक रुप दिखा सके। देव ध र्म ही एक ऐसा धर्म हैं जो मनुष्य को परम पू० भगवान देवात्मा की देव ज्योति मनुष्य का वास्तविक रुप दिखाती है। श्रीमान जी ने डा० मुनशा सिंह जी आदि के उदाहरणों द्वारा आत्मिक दर्पण की घटनाएं पेश की और बताया कि दुनियां का नक्शा देव धर्म ही बदलेगा।

4.30. बजे शाम:- शाम को एक और सभा की गई जो श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने कुछ घटनाओं का वर्णन करते हुए बताया कि मनुष्य अधिकतर स्वार्थवश धन के पीछे दौड़ रहा है। काम वासना ने मनुष्य को अन्धा और पागल बनाया हुआ है। उसकी धन, पद , विद्या बेकार साबित हो रहे हैं। परम पू० भगवान देवात्मा ने रोशन किया है कि मनुष्य अपने भावों के हाथ अपनी ओर औरों की हानि करने के लिए बेबस हैं। इन भावों को वास्तविक रुप में जानने के, नीच भावों से सच्ची मुक्ति के लिए उच्च भावों के पैदा करने के लिए देवात्मा पर मानव जाति निर्भर है। परम पू० भगवान देवात्मा के देव प्रभावों ने जो उच्च परिवर्तन पैदा करके मनुष्य जीवन में स्वर्गिय रस और सुख के सच्चे क़िश्में किए हैं। कुछ उदाहणों श्रद्धा भाव से वर्णन की। सभापति जी और अन्य जनों के हृदय ज़ोरदार तौर पर प्रभावित होकर अश्रुपात कर रहे थे। फिर कुछ जनों ने अपने भावों का प्रकाश किया।

10.4.10. सुबह 8 बजे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने देव समाज पब्लिक स्कूल श्री अकबरपुर के बच्चों को नीति शिक्षा सम्बन्धी छोटी सी सभा करवाई। कुछ मिन्टों के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने भी बच्चों को सम्बोधन किया। लगभग 12 बजे सारे धर्म सम्बन्धीं कानपुर पहुंचे। श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह और किशन सिंह जी चौहान शाम तक लखनऊ गए।

लखनऊ

लखनऊ पहुंचकर 8.30 बजे एक सभा श्रीमान देवकी नन्दन जी के घर रखी गई विजय जी

और देवकी नन्दन जी के दोनों परिवारों ने लाभ उठाया। यह सभा श्री किशन सिंह जी चौहान ने करवाई। उन्होंने गुरू दर से पाए हुए उपकारों का भरे दिल से ब्यान किया। मृत्यु सत्य है, परलोक का जीवन सत्य है। इस दुनियों में मनुष्य नीच भावों की भेंट चढ़ जाता है जबकि इस दुनियां में सब सामान और सम्बन्धी छोड़ने लाज़मी हैं, कुछ साथ नहीं जाता केवल वह भाव ही जाते हैं, जो सारी उमर पैदा हुए हैं। "मैं तुम्हारी नहीं" नामक लेख का पाठ किया गया गुरू के साथ जुड़ने की ज़ोरदार प्रेरणा की गई।

11.4.10. - 9.30 बजे सुबह: - यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें श्रीमान रुप चन्द जी ओर उनके बेटों के सब परिवारिक जन शामिल हुए। इस सभा में श्रीमान जी ने बहुत व्याकुलता के साथ व्यान किया कि दुनियां के धन, दौलत, मान बड़ाई आदि का अधिकार मनुष्य पर इतना बढ़ जाता है कि सत्संग की अवश्यकता वा कदर कम हो जाती है। जीवन में उदासीनता आ जाती है। देव आत्मा का उच्चतम मिशन साधारण नज़र आने लगता है। अबोधता में बहुत हानि हो जाती है। एक एक जन को याद दिलाया कि जो पहले अवस्था थी उसमें अब अन्तर आ गया है। नेचर में सबसे बड़ी हानि देव प्रभाव दायक मण्डल से उदासीन वा दूर होना है। श्री विजय जी ने खड़े होकर ब्यान किया कि गौण चीजों से बचकर सभा साधन के साथ जुड़ने का यत्न करेंगे।

11.4.10 - शाम 6.30 बजे यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया गया कि देव धर्म परिवर्त्क पूजनीय भगवान देवात्मा के दर वो प्रचलित धर्म साधनों को तरह समझना भारी भूल है। एक सभा ही जीवन का कांटा बदल देती है। तीन, चार पुरानी उदाहरणों के बाद नई सच्ची उदाहरणें पेश की कि कैसे एक एक सभा ने ही परिवारों के भीतर सचमुच उच्च मेल के अदभुत नज़ारे पैदा किए हैं जो हृदय को छू लेते हैं। देवात्मा के देव अमृत द्वारा प्राप्त हुए निजी उपकारों का भरे दिल से आंसु बहाते हुए वर्णन किया और ज़ोरदार कामना की हर हाल में इस दर से जुड़ा रहूं। और भी जो अधिकारी जन हों इस परम सौभाग्य की खुशखबरी उन तक पहुंच सके। मैं सत्गुरू का कृतघ्न सेवक न बनूं बल्कि हो सके तो शुकरगुजार सेवक बनकर इस दर का तिल फुल कर्ज़ा उतार कर इस दंनियां से जाऊं।

<u>12.4.10. - 8.00 बजे सुबह</u>: - यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई श्रीमान जी ने बताया कि परम पू० भगवान देवात्मा के उपकार वर्णन नहीं हो सकते। यह भी फरमाया कि पू० भगवान के उपकारों का वर्णन नहीं हो सकता। यह भी फरमाया कि सब मनुष्य नीच सुख अनुरागी हैं। देवात्मा पूर्ण शुभ अनुरागी और सत्य अनुरागी हम उनको नहीं पहचान सकते। उनसे कुछ लाभ उठा सकते हैं। मनुष्यात्मा और देवात्मा का श्रेणी का अन्तर है। मनुष्य के नीच अनुराग हमेशा अन्धेरा पैदा करते हैं। देवात्मा रुहानी सूर्य हैं। उनके साथ जुड़ना मनुष्य का परम सौभाग्य है। कई उदाहरणों द्वारा नीच सुखों से पैदा अन्धकार का वर्णन किया गया। अपने माता जी के सम्बन्ध में अपनी नीच अवस्था का वर्णन किया। परम पू० भगवान देवात्मा ने जितना

अन्धकार घटाया है, उसका बहते आंसुओं से वर्णन किया। कई हाज़रीन भी दिल की गहराई से प्रभावित हो रहे थे। और परम पू० भगवान देवात्मा द्वारा पैदा किया सत्संग की अवश्यकता को अनुभव कर रहे थे।

12.4.10 शाम 8.00 बजे यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। हम यह गाते हैं, "जीवन ज्योति के तुम सूर्य, अन्धेरा देर करते हो" हमारा स्वार्थ का भाव मुख्य रुप से अन्धेरा पैदा करता है। और भावों की तरह स्वार्थ भाव भी अपनी तृप्ति चाहता है। नीच भावों से परिचालित होकर मनुष्य अन्याय, अपमान और अपहरण की गतियां करता है। पैसे के लालच मे एक पढ़ी लिखी विद्या विभाग में अफसर लड़की अपनी माता को दुखी करती रही। अपशब्द बोलती रही। अपने धर्म पति की धर्म पुस्तकों का निरादर करती रही। उसके महा सौभाग्य कि उसको परम पू० भगवान देवात्मा की देव ज्योति मिली, जिस में उसे अपनी ग़ल्तियां नज़र आई, माता के उपकार नज़र आए। बहुत ज़ोर देकर सेविका बनी, परम पू० भगवान देवात्मा के देव प्रभाव पाकर माता को अपने घर रखा, बेमिसाल सेवा की। कृतघ्नता के अन्धकार से निकल कर शुकरगुज़ार बेटी बनीं। कुछ और उदाहरणें पेश करके नीच भावों और मिथ्या के खौफ़नाक अन्धकार का वर्णन किया। देव ज्योति प्राप्त करके हृदय मिथ्या और नीच भावों से निकल कर सच्चे धर्म र्मांग के मुसाफिर बनते हैं। उदाहरणों द्वारा रोशन किया, सारा वातावण बहुत ही प्रभावशाली बना। यह भी बताया गया कि इस ज्योति की, इस ज्ञान की जीवन के हर मोड़ पर अवश्यकता है।

13.4.10 - सुबह 8 बजे: - इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य नीच सुखों का प्रेमक है। मनुष्य में और पशु में जन्मजात श्रेणी का अन्तर है। देवात्मा किसी सुख के प्रेमक नहीं, उनकी श्रेणी ही अलग है। उनके भीतर अद्वितीय देव ज्योति और देव तेज का प्रकाश हुआ है। जिसकी मनुष्य को अपने अस्तित्व की रक्षा और विकास के लिए बेहद अवश्यकता है। परम प० भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के बिना मनुष्य को अपने मुख्य लक्ष्य का पता नहीं लगता और नीच सुख अनुरागों की गुलामी में अपने मुख्य लक्ष्य से उदासीन रहता है। नीच सुख अनुराग अपनी तृप्ति में लगाकर उसको अपना गुलाम बनाए रखते हैं। धन का अनुराग, इज्ज़त का अनुराग, मान बड़ाई का अनुराग अहुत ख़ौफनाक नशेमनुष्य की महा हानि करते हैं। अबोधी मनुष्य के अस्तित्व का उसी प्रकार सर्वनाश करते हैं, जैसे कुत्ते का बच्चा सड़क पर बेख़ौफ घूमता हुआ मारा जाता है। एक बहुत बड़े सेठ की उदाहरण देकर बताया कि वह धन का दास होकर न अपने लिए कोई कपड़ा खरीद सकता था, न कोई अच्छा खा सकता था, न किसी अच्छी सवारी का सुख ले सकता था अपना ईलाज भी नहीं करा सकता था। उसका धन का प्रेम ही उसका दुश्मन बना हुआ था। पू० भगवान के दर के बिना मनुष्य धनी पदधारी होकर भी जीवन बर्बाद कर लेते हैं। अपनी आत्मा अर्थात हमारी पूरी हस्ती का भी नाश हो सकता है। आत्मा का विकास देव प्रभवों के द्वारा ही सम्भव है। बहुत हितकर देव बाणी का पाठ किया, उसी विषय पर किया गया।

शाम को यहां पर आखिरी सभा की गई। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में सम्बन्धों के विषय में बताया गया। विशेष कर सास बहू के रिश्ते में रोशनी पाई गई। उच्च भावों द्वारा व्यवहार उच्च और महान हो जाते हैं। इनके बिना सम्बन्ध मीठे और हितकर नहीं हो सकते। एक एक उच्च भावधारी सास और बहू के स्वार्थ त्याग के व्यवहार पेश किए गए। कुछ जनों ने ध्यान पूर्वक सुनकर लाभ उठाया। सारे परिवारों ने ही इस सत्संग से लाभ अनुभव किया। बार बार सत्संग रखने की इच्छा प्रगट की। विजय जी और देवकी नन्दन जी ने 5000 रु० नकद दान दिया और अपने अच्छे भावों का इज़हार किया। सब जनों ने महोत्सव पर आने की इच्छा प्रगट की। फिर बलबहादुर जी को गाड़ी पर सवार करके आए। विक्की जी, उनकी पत्नी और बेटा श्रीमान बलदेव सिंह जी को चण्डीगढ़ ऐक्सप्रैस पर सत्कार सहित चढ़ा कर आए। इस प्रकार सारा संग्राम सफल रहा।

मण्डी डबवाली:-18 अप्रैल को श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंचे। एक परिवार को लेकर दुपहिर को सभा कराई "बनूं दास सचियां का, करूं न नाश जीवन का" नामक पद को समझाया गया कि किस प्रकार खाने, पहनने, सुस्ती, धन आदि की रुचियों मनुष्यों के जीवनों को बर्बाद कर रही है। उदाहरणों द्वारा समझाया गया। 350 रु० दान में दिए और श्रीमान जी शाम को चोटाला रोड पर मन्दिर में रुके।

(ऐक सेवक)

पेज 12 का बाकी

तंबू में घुस गया। वहां उसने एक साधु को माला जपते देखा। उसने साधु से शरण मांगी और अपने धन की थैली उसे संभालने के लिए दे दी। साधु वेशधारी डाकू ने व्यापारी से कहा-थैली एक कोने में रख दो और निश्चिंत होकर जाओ। जैसे ही डाकू व्यापारियों को लूटकर चले गए, वह व्यापारी अपनी थैली लेने साधु के तंबू में पहुंचा, किंतु वह चकित रह गया, जब उसने देखा कि वह साधु तो उस डाकुओं की टोली का सरदार है और लूटे गए धन का डाकुओं में विभाजन कर रहा है। व्यापारी निराश होकर वहां से जाने लगा, किंतु साधु ने व्यापारी को देख लिया। उसे आवाज लगाई और कहा-तुम्हारी थैली जहां तुमने रखी थी, वहीं है, ले जाओ। व्यापारी ने देखा कि उसका धन सुरक्षित है। वह प्रसन्न हो थैली लेकर डाकू को धन्यवाद देते हुए चला गया। उपस्थित अन्य डाकुओं ने अपने मुखिया से हाथ आए धन को लौटाने का कारण पूछा तो वह बोला-वह व्यापारी मुझे भगवान का भक्त और ईमानदार साधु समझकर मेरे पास धन रख गया था। इसी कर्तव्य भाव से थैली लौटाकर मैंने इस वेश की पूजा करने के साथ व्यापारी के विश्वास की रक्षा की है,न कि उसके धन की।

वस्तुत:- किसी का विश्वास तोड़ने से सच्चाई व ईमानदारी सदा के लिए संदिग्ध हो जाती है। अत: अपने कृत्य से अविश्वास को जन्म न लेने दें।

WPP - Regd. Postal No.Pb (0077) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

न्याय

✦ मनुष्य आपने पक्ष के व्यक्तियों को अनाचार के माध्यम से कुछ प्राप्त करते हुए अथवा अन्य लोगों का शोषण करते हुए देखकर प्रसन्न होता है कि वह अपने पक्ष वालों के लिए सुख के साधन एकत्रित कर रहा है, किन्तु वास्तव में वह सुख के नहीं अपने और अपनी समाज के नाश के साधन एकत्रित कर रहा है। प्रकृति के कर्म और सुख के नियम बहुत कठोर हैं और जटिल भी। सुख अर्जित करना चाहिए, एकत्रित नहीं।

(नरिन्द्र कोहली)

✦ न्याय के मार्ग में कठिनाईयां तो आएंगी ही। न्याय का मार्ग यदि सरल होता और सुखद होता, तो संसार में न्याय का पक्ष लेने वालों की संख्या इतनी कम क्यों होती? जो यह मार्ग चुनेगा उसका मुल्य तो चुकाना ही पड़ेगा

(नरिन्द्र कोहली)

✦ कैसा वचित्र है मनुष्य! न्याय की रक्षा से पहले वह अपनी रक्षा करना चाहता है। अपने असुरक्षित होने का ध्यान आते ही वह या तो अत्याचारों के साथ समझौता कर लेता है या उसकी तरफ से आंखें बन्द कर लेता है।

✦ सच्चा सुख निर्माण का सुख है। स्वार्थ का त्याग कर अपनी शक्तियों को जन कल्याण के लिए लगाओ, यह संसार तुम्हारे लिए सुख-मय हो जाएगा।

✦ धर्म, नीति और सत्य की सदा विजय होती है, अन्यथा सभी शक्तिशाली आततायी अमर हो जाते।

✦ अपने सगे सम्बन्धियों, मित्रों तथा अपने पक्षधरों द्वारा होने वाले अन्यायों का विरोध तथा प्रतिकार, न्याय की पहली मांग है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts